मद्रित पष्ठों की संख्या : 3

BHDC-132

स्नातक उपाधि कार्यक्रम (सी. बी. सी. एस.)

(बी. ए. जी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2021

बी.एच.डी.सी.-132 : मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 20

(क) पारब्रह्म के तेज का, कैसा है उनमान।
कहिबै को सोभा नहीं, देखें ही परवान॥

(ख) तपै लाग अब जेठ असाढी। भै मोकहँ यह छाजनि गाढी॥
तन तिनवर या झरों खरी। मैं बिरहा आगरि सिर परी॥

साँठि नाहिं लगि बात को पँछा। बिन जिय भए मँज मन घँघा॥
बंध नाहिं और कंध न कोई। बाक न आव कहौं केहि रोई॥

(ग) मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
ख्याल परैं ये सखा सबै मिलि, मेरैं मख लपटायौ।
देखि तही सींके पर भाजन, ऊँचै धरि लटकायौ॥
हौं ज कहत नान्हे कर अपने, छींका केहि विधि पायौ।
मखद धि पोंछि, बद्धि इक कीन्ही, दोना पीठि दरायौ।

2. रीतिकाल के प्रमख कवियों का परिचय दीजिए। 20

3. भक्ति का स्वरूप स्पष्ट करते हए भक्तिकाव्य की प्रमख प्रवत्तियों पर प्रकाश डालिए। 20

4. संत रविदास की भक्ति–भावना का विवेचन कीजिए। 20

5. सरदास का जीवन-वत्त प्रस्तत करते हए उनकी रचनाओं का परिचय दीजिए। 20

6. बिहारी की कविता में अभिव्यक्त शंगार और प्रेम की विवेचना कीजिए। 20

7. तलसीदास की भक्ति का परिचय देते हए सरदास और तलसीदास की भक्ति पद्धति की तलना कीजिए। 20

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

2×10=20

(क) ज्ञानाश्रयी शाखा

(ख) घनानंद की कविता में प्रेम-निरूपण

(ग) मीराबाई के पदों में स्त्री-चेतना

(घ) कबीर के काव्य में प्रतीकात्मकता